Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 1, October-2017, ISSN 2230-7540

जहाँगीर के समय: शाही हरम और राजनीति

Sushama*

Research Scholar

सारांश – 1605 ई. में अकबर की मृत्यु के बाद जहांगीर बादशाह बना तो हरम की महिलाओं ने जहांगीर को अनेक बार अकबर के क्रोध से बचाया था। सलीमा सुल्तान बेगम का प्रभाव अकबर के बाद जहांगीर के समय भी जारी रहा। जब 1606 ई. में जहांगीर के बड़े बेटे खुसरों ने विद्रोह कर दिया, खुसरो को पकड़ लिया गया। हरम की महिलाओं ने खुसरो को बचाने में मध्यस्थता की प्रभावशाली भूमिका अदा की। इसके बाद 1613 ई. में भी खुसरो को बचाने की कोशिश हरम की महीलाओं द्वारा की गई।[27]

----------X----------

नूरजहाँ –

जहांगीर के समय की सबसे प्रभावशाली महिला जिसका प्रभाव मुगल राजनीति पर स्पष्ट दिखाई देता है वह थी नूरजहाँ। जिसका असली नाम था महेरुन्निसा, वह परसीया के एक अमीर गैयास बेग की पुत्री थी। गियास बेग अकबर के समय हिन्दुस्तान आया था। अकबर के द्वारा गियास बेग और उसके परिवार के अन्य सदस्यों को प्रशासन में अनेक पदां पर नियुक्त किया। गियास बेगको 1595 ई. में काबुल का दीवान नियुक्त किया गया। गियास बेग की खूबियों को पहचान कर जहांगीर ने 1605 ई. में उसे अपने आधे राज्य का दीवान बना दिया, 'इतिमादुद्दौला' का खिताब बख्शा और उसके मनसब को बढ़ाकर 1500 कर दिया लेकिन जब जहांगीर की हत्या करने की खुसरो की साजिश का भंडा–फोड़ हुआ तो उसमें इतिमादुद्दौला और उसके बेटे को भी आरोपी बनाया गया। इतिमादुद्दौला दीवान का पद खो चुका था उसे कैद में डाल दिया गया, लेकिन जुर्माना भरने पर छोड़ दिया गया, दो साल बाद 1609 ई. में उसे अपने पद पर फिर से बहाल कर दिया गया।[28] इस बीच 17 साल की उम्र में मेहरुन्निसा का विवाह अली कुली इस्ताजलु नामक एक ईरानी से कर दिया गया। मेवाड़ के अभियान के दौरान अली कुली सलीम की चाकरी में लग गया। उसके साहस और बहादुरी से प्रभावित होकर सलीम ने उसे शेर अफगान का खिताब दिया जो उन दिनों कोई असाधारण खिताब नहीं था।

शेर अफगान का शेष जीवन और मृत्यु और मेहरुन्निसा का आगरा भेजा जाना इन सब बातों का समकालीन इतिहासकारों ने अलग–अलग वर्णन किया है। कुछ इतिहासकार अली कुली की मृत्यु का कारण कुतुबद्दीन और अली कुली के बीच पैदा गलतफहमी को मानते हैं तो कुछ इतिहासकार यह भी लिखते हैं कि ''मेहरुन्निसा के लिए ही जहांगीर ने अलीकुली का कत्ल करवाया, क्योंकि वह शादी से पहले से ही मेहरुन्निसा को चाहता था, लेकिन अकबर के डर से वह उससे शादी न कर सका इसलिए ही आगे चलकर जहांगीर ने अली कुली का कत्ल करवाया।'' मेहरुन्निसा 1607 से 1611 तक आगरा में सलीमा सुल्तान बेगम की खिदमत में रही।

1611 ई. में नौरोज के मौके पर मीना बाजार में मेहरुन्निसा को देखकर जहांगीर उस पर आसक्त हो गया और कुछ समय पश्चात मेहरुन्निसा से जहांगीर ने विवाह कर लिया। विवाह के समय मेहरुन्निसा 35 वर्ष की थी; लेकिन अपनी जिंदा दिली, बातचीत के लुभावने तरीके, अपनी सुविज्ञता और असंदिग्ध रूप–लावण्यता के कारण वह औरों से हटकर थी। जहांगीर ने उसे नूरमहल, फिर नूरजहां और अन्त में बादशाह बेगम का खिताब दिया। लेकिन इतिहास में वह 'नूरजहां' के नाम से जानी जाती है।[29]

ज्हांगीर के जीवन के शेष 16 वर्षों (1611 ई.–1627 ई.) के दौरान नूरजहां की भूमिका और दरबारी राजनीति पर उसके प्रभाव को लेकर काफी विवाद रहा है। 'मुतमद खां' जिसने अपना विवरण शाहजहाँ के शासन काल के आरंभिक वर्षों मं लिखा बताता है कि ''नुरजहां के पिता इतिमादुद्दौला और भाई आसफ खां को सीढ़ी–दर–सीढ़ी, इतने ऊंचे स्थान पर पहुंचा दिया गया कि साम्राज्य के सभी महत्त्वपूर्ण मामलों पर इस परिवार के सदस्यों का नियन्त्रण हो गया और उसके (नूरजहां) के रिश्तेदारों और उससे संबंधित दूसरे लोगों को तरह–तरह की मेहरबानियों से नवाजा गया। वह आगे कहता है, 'उस परिवार के गुलामों, आश्रितों या रिश्तेदारों में ऐसा कोई नहीं बचा जिसे कोई संतोषजनक मनसब या जागीर नहीं दी गई। अंत में वह लिखता है कि 'हिन्दुस्तान के विस्तृत क्षेत्र के चुनिंदा हिस्से उस महिला के रिश्तेदारों की जागीर थे।''[30]

लेकिन कुछ विद्वानों का कहना है कि यद्यपि सम्राट के साथ नूरजहां के विवाह से इतिमादुद्दौला और आसफ खां लाभान्वित हुए तथापि मूलतः अपने स्थान के लिए वे उसके ऋणी नहीं थे। जैसा कि ''जहांगीर अपने संस्मरण में कहता है – 'सेवा की वरीयता, ईमानदारी के परिणाम और राजकाज के अनुभव के आधार पर इतिमादुद्दौला को मैनें अपने राज्य की वजारत के

[27]. सोमा मुखर्जी, रॉयल मुगल लेडिज एण्ड देयर कोन्ट्रिब्यूसन, पूर्वोक्त, पृ. 132
[28]. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत (सल्तनत से मुगलों तक), जवाहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली – 110016, पृ. 239–240
[29]. सतीश चन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 240–241
[30]. सतीश चन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 241

www.ignited.in

ऊंचे पद पर प्रतिष्ठित कर दिया।''[31] 1611 ई. में अपनी नियुक्ति के समय उसका दर्जा केवल 1500 का था, लेकिन एक साल के अन्दर उसे 4000 जात और 1000 सवार का स्थान दे दिया गया। उसके बेटे आसफ खां को भी बहुत सुविज्ञ, चतुर और पराक्रमी समझा जाता था, वह मीर बख्शी के पद पर आसीन रहा। खुर्रम यानी भावी शाहजहां से उसकी बेटी अर्जुमंद बानों के विवाह से उसकी स्थिति और मजबूत हुई।

आधुनिक इतिहासकार 'डॉ. बेनीप्रसाद' की परिकल्पना है कि जहांगीर से नूरजहां के विवाह के कुछ दिन बाद नूरजहां, उसके पिता इतिमादुद्दौला, भाई आसफखां और शहजादा खुर्रम की 'चौकड़ी' मुगल दरबार में सर्वोपरि हो गई और 1620 ई. तक वह इसी स्थिति में रही। उनका कहना है कि शाही सेवा में रिक्त होने वाले अधिकांश स्थानों पर अपने नजदीकियों को नियुक्त कर इस 'चौकड़ी' ने अपनी शक्ति को सुदृढ़ कर लिया। यहां तक कि इस चौकड़ी की मेहरबानी इज्जत और रुतबा प्राप्त करने का एकमात्र वसीला बन गई। इससे स्वभावतः अन्य सरदारों में ईर्ष्या और विरोध का भाव जगा। बेनी प्रसाद के अनुसार, इसके फलस्वरूप इस दौर में दरबार दो गुटों में बंट गया। एक गुट नूरजहानी 'चौकड़ी' के अनुगामियों का था और दूसरा उसके उन प्रतिद्वंद्वियों का था जो गद्दी का वारिसा खुसरों को बनाना चाहते थे।''[32]

डॉ. बेनी प्रसाद 1622 ई. में के विद्रोह और 1620 ई. में 'चौकड़ी' के भंग होने का कारण भी नूरजहां के जोड़–तोड़ को मानते हैं। उनका कहना है कि ''सत्ता की भूखी नूरजहां को लगा कि अगर शाहजहां (खुर्रम) गद्दी पर बैठ गया तो वह उसे पृष्ठटभूमि में फैंक देगा। इसलिए उसने उसे विस्थापित करने के लिए और गद्दी पर बैठने के लिए एक अधिक भरोसेमंद औजार ढूंढा यानि उसके भाई शहहियार को जिसका विवाह उसने अपने पहले पति शेर अफगान से उत्पन्न बेटी 'लाडली बेगम' से कर दिया। 'जहांगीर के शासनकाल के अंतिम सात वर्षों का मार्ग दर्शक सूत्र अपने उम्मीदवार के लिए रास्ता साफ करने की नूरजहां की कोशिशों में निहित दिखाई देती है।'' (बेनीप्रसाद)[33]

खुर्रम के साथ नूरजहां की सांठ–गांठ के संबंध में 1611 ई और 1620 ई. का कोई समकालीन साक्ष्य नहीं मिलता। यह आरोप यूरोपीय स्त्रोतां के, खास तौर से जहांगीर के दरबार में इंग्लैंड के दूत ''सर टामस बरो' के विवरण के आधार पर लगाया गया है।'' ये लोग फारसी ठीक से नहीं जानते थे। इसलिए ये मुख्य रूप से उन दिनों उड़ रही अफवाहों पर भरोसा करके इन्होंने लिखा।[34] लेकिन 1616 ई. के बाद नूरजहां और खुर्रम के बीच मनमुटाव की बात ये लोग करते हैं।

1622 ई. में जब जहांगीर अफीम के नशे की लत के कारण तथा अस्तमे की बीमारी के कारण बहुत कमजोर हो चुका था। तब नूरजहां का प्रभाव और अधिक मुगल राजनीति में बढ़ गया था, क्योंकि जहांगीर शाहजहां पर विश्वास नहीं करता था, जो शाहजहां पहले ही शासन प्राप्ति की लालसा के कारण अपने बड़े भाई 'खुसरो' का कत्ल कर चुक था। जहांगीर इस समय पूरा विश्वास अगर किसी पर कर सकता था तो वह थी 'नूरजहां'। 'अबुल फजल' एक स्थान पर वर्णन करता है कि ''जहांगीर बार–बार यह कहा करता था कि अगर उसे प्रतिदिन कुछ शराब औरएक शेर घोसत (मांस) मिलता रहे तो वह इससे सन्तुष्ट है क्योकि बाकी का सारा कार्य नूरजहां सम्भाल सकती है।''[35] ''इैला बेल' इस बात का वर्णन करता है कि ''नूरजहां हरम से ही तथा दरबार में अमीरों को आदेश देती थी।''[36]

बादशाह की तरह ही नूरजहां भी नगाड़े का प्रयोग करने लगी थी। 1622 के बाद नूरजहां का नाम सिक्कों पर भी अंकित किया गया। अनेक फरमान नूरजहां द्वारा जारी किए गए। अनेक बार वह झरोखे में बैठती थी और लोगों की समस्याएं सुनती थी। 'मुतमदखां' वर्णन करता है कि ''सभी फरमान और सिक्कों के साथ नूरजहां का नाम अवश्य जुड़ा होता था, कुछ फरमानों पर जहांगीर के साथ नुरजहां का नाम प्राप्त होता है। यह सब 1622–27 के दौरान उस समय हुआ जब जहांगीर काफी कमजोर हो चुका था।[37] इसके साथ यह बिल्कुल सच है कि नूरजहां के नाम का खुत्बा कभी नहीं पढ़ा गया। यह अधिकार जहांगीर ने अपनी मृत्यु तक किसी को नहीं दिया। 1622 ई. के बाद जहांगीर हर कदम पर नूरजहां का साथ लेता था। इस समय के दौरान नूरजहां द्वितीय शासक की तरह काम करती थी। 1622 ई. में जब इतिमादुद्दौला चल बसे वली अहमदशाह खुले विद्रोह पर उतर आया और महाबत खां जैसे महत्त्वाकांक्षी सरदारों ने सम्राट को अपने हाथ की कठपुतली बनाने का प्रयत्न आरंभ कर दिया। यही वह समय था जब नूरजहां ने हरम से सक्रिय राजनीति में भाग लिया और साम्राज्य को टूटने से बचाया।

1622 ई. के बाद नूरजहां को बहुत ही कठिन स्थिति का सामना करना पड़ा। उसका मुख्य प्रयत्न अपने पति के जीवन और प्रतिष्ठा की रक्षा करना था। यह कार्य उसने सफलता पूर्व सम्पन्न किया।

नूरजहां के परिवार के हाल के एक अध्ययन में ''इरफान हबीब ने इतिमादुद्दोला और उसके परिवार द्वारा प्राप्त महत्त्वपूर्ण पदों का विवरण प्रस्तुत किया है। उदाहरण के लिए 1611 ई. और 1616 ई. के बीच इमिादुद्दौला वजीर के पद पर मुकम्मल रहने के साथ ही लाहौर का सूबेदार नियुक्त किया गया और उसके बेटे आसफ खां ने कुछ समय तक वकील के रूप में काम किया। 1621 ई. में इतिमादुद्दौला की मृत्यु के समय लाहौर और कश्मीर के अलावा बंगाल, उड़ीसा तथा अवध के तीन सूबे उसके परिजनों के हाथ में थे। इतिमादुद्दौला की मृत्यु से उसके परिवार की स्थिति में कोई गिरावट नहीं आई। आसफ खां कुछ और समय तक वकील बना रहा और मीर बख्शी के पद पर नूरजहां का एक रिश्तेदार इसदत खां आसीन हो गया। इसके अलावा लाहौर, कश्मीर, मुल्तान, थट्टा, आगरा, गुजरात और उड़ीसा की सूबेदारी इस परिवार के सदस्यों के हाथ में थी।''[38]

इस वर्णन से यह सिद्ध होता है कि नूरजहां का परिवर उस समय कितना शक्तिशाली था। जैसा इससे पहले मुतमंद खां ने ऐसा ही वर्णन अपनी रचना में किया है। तथापि जैसा कि 'इरफान हबीब' बताते हैं कि ''इसका मतलब यह नहीं है कि पूरा मुगल उमरा वर्ग दो गुटों में बंट गया – नूरजहां के परिवार के कृपा पात्रों और समर्थकों के गुट तथा नवोदित लोगों की समृद्धि और अहंकार से ईर्ष्यादग्ध पुराने सरदारों के गुट में। जब

[31]. पूर्वोक्त, पृ. 241
[32]. सतीश चन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 242
[33]. सतीश चन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 242
[34]. क्ही, पृ. 242–243
[35]. सोमा मुखर्जी, एडिक्टस फरोम दा मुगल हरम, पूर्वोक्त, पृ. 133–134
[36]. क्ही, पृ. 134
[37]. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, पृ. 2444
[38]. सतीश चन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 244

महाबत खां के हाथों में अपरिमित सत्ता थी छिनने की कोई कोशिश नहीं की गई।''[39]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अशरफ, के. एम. : **हिन्दुस्तान के निवासियों का जीवन एवं परिस्थितियां**, हिन्दी अनुवाद के. एस. लाल, दिल्ली, 1990.

ओझा, पी. एन. : **सम आसपैक्ट आफ मिडिवल इंडियन सोसाइटी एण्ड कल्चर**, दिल्ली, 1978.

चौधरी, तपन राय व हबीब, इरफान : **द कैम्ब्रीज इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया,** भाग–1, कैम्ब्रीज, 1982

चोपड़ा, प्राणनाथ : **सम आसपैक्ट आफ सोशल लाइफ डयूरिंग द मुगल एज् (1526–1707),** जयपुर, 1963

Corresponding Author

Sushama*

Research Scholar

E-Mail – omshivmedhall@gmail.com

[39]. सतीश चन्द्र, पूर्वोक्त,, पृ. 244